

खेती और किसानों की वर्तमान स्थिति



भारत कृषि प्रधान देश रहा है और यह बात सारी दुनिया जानती है। कृषि प्रधान होने का मतलब होता है जहाँ देश की सारी व्यवस्था (आर्थिक और सामाजिक) खेती के आस पास बुनी गई हो अर्थात ऐसी व्यवस्था के केन्द्र में है कृषि और उस व्यवस्था का नायक है कृषक! लेकिन आज भारत में किसान की बहुत बुरी दशा है। यह हम खबरों में सुनते जरूर हैं किन्तु वो दशा बुरी कैसे है, यह बात बहुत कम लोग जानते हैं। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक: https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4eVVEVWg5UmlfX1U/edit?usp=sharing

भारत की मिट्टी बहुत नर्म है, यहाँ 12 महीने धूप रहती है, यहाँ 6 मौसम हैं, न अधिक गर्मी पड़ती है और न अधिक सर्दी तथा वर्षा भी सामान्य रहती है। इन्हीं सब कारणों से भारत की जलवायु उत्तम कृषि के लिए एकदम उपयुक्त है। यूरोप की स्थिति भारत से ठीक उलटी है इसीलिए उनके वहाँ कृषि प्रधान आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था की कल्पना नहीं की जा सकती। अंग्रेजों के दस्तावेज़ बताते हैं कि 1750 तक भारत की एक एकड़ भूमि पर इंग्लैंड की एक एकड़ भूमि की तुलना में 3 गुणा पैदावार होती थी! उस समय भारत में केवल चावल या धान की ही 1 लाख से ज्यादा किस्में थीं! 1760 तक भारत में सबसे संपन्न वर्ग किसानों का होता था इसीलिए यह उक्ति बनी थी, 'उत्तम कृषि माध्यम बान, करे चाकरी कुकर निदान'। भारत की जलवायु की ही तरह चीन की भी जलवायु रही है। अंग्रेजों के आंकड़ों के अनुसार अकेले भारत और चीन का कुल उत्पादन, विश्व के कुल उत्पादन का 70% तक था!

विश्व की सबसे उन्नत जल व्यवस्था भारत में रही है। यहाँ भूमिगत जल की मात्रा प्रचुर है, नदी हैं, तालाब हैं, नहर हैं, वर्षा से आने वाला जल है। परंतु अंग्रेजों ने कानूनों की मदद से इस सारी व्यवस्था को चौपट कर दिया। भारत में जितने भी अकाल हुए, उनमें कुछ को छोड़कर बाकी सब अंग्रेजों की नीति की वजह से हुए। 1760 से पहले कुछ रियासतों को छोड़कर कहीं भी किसानों से लगान नहीं लिया जाता था, जैसे मैसूर और मालाबार की रियासत। अंग्रेजों ने 1760 में एक कानून बनाकर किसानों से सीधे 50% लगान वसूलना शुरू कर दिया! 1820 तक आते आते किसानों की दशा दयनीय हो गई। जो किसान लगान नहीं दे पाता था उस पर कोड़े बरसाए जाते थे, उसका घर जला दिया जाता था तथा उसे गाँव-समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था!

अंग्रेज़ इस बात को समझते थे कि भारत की उन्नत अर्थव्यवस्था का केन्द्र है कृषि तथा कृषि निर्भर है गाय-बैल पर। कृषि को नष्ट करने के लिए गाय-बैल को नष्ट करना आवश्यक था। इसके लिए उन्होंने गौवंश हत्या का एक कानून बनाया। सन 1760-1820 तक भारत में 48 करोड़ गौवंश की हत्या की जा चुकी थी। ये बात सब जानते हैं कि यूरोपीय लोग सबसे अधिक गोमांस खाते हैं और

उनके यहाँ गोमांस भारत, बंगलादेश और पाकिस्तान से सबसे अधिक मात्रा में आयात होता है। जो जातियाँ पशु पालन में सिद्धहस्त थीं, उन पर अंग्रेज़ों ने जुल्म किए। एक सोची समझी नीति के तहत कृषि और पशु पालन को अलग कर दिया गया। जो दोनों काम पहले एक किसान किया करता था, बाद में पशुओं को बूचड़खाने में डलवाने के बाद दो वर्गों में बंट गया।

कृषि और वन में चोली दामन का साथ है। वनों के पेड़ मिट्टी को बाँध कर रखते हैं जिससे मिट्टी बह कर नदी नालों में नहीं जाती। इससे होता यह है कि नदी का स्तर सामान्य रहता है और कभी अधिक वर्षा होने पर बाढ़ नहीं आती। इसके अलावा जंगल की लकड़ियों से भारत का दैनिक जीवन कई हजार वर्षों से चला आ रहा था। अंग्रेज़ों ने सन 1872 में एक कानून बनाया जिसका नाम था इंडियन फोरेस्ट एक्ट। इस कानून के तहत आम व्यक्ति द्वारा जंगल की लकड़ी काटना गैर कानूनी हो गया। जंगलों का नियंत्रण अंग्रेज़ों के हाथ में चला गया। अंग्रेज़ों के ठेकेदार अंधाधुंध पेड़ों को काटकर उसकी लकड़ी को सिगरेट जैसे उत्पादों के लिए उपयोग करने लगे। यहाँ सिगरेट पीने के लिए तो लकड़ी उपलब्ध थी परंतु चूल्हा जलाने के लिए नहीं! इससे हुआ यह कि मिट्टी का अपरदन होने से बाढ़ जैसे संकट आने लगे तथा वन्य जीवन भी प्रभावित हुआ। दुर्भाग्यवश यह कानून अभी भी लागू है हमारे देश पर और ITC जैसी कंपनियाँ धड़ल्ले से पेड़ काटती हैं। यही नहीं, अंग्रेज़ जबरदस्ती कुछ ऐसी फसलों का उत्पादन किसानों से करवाते थे जिससे भूमि को नुकसान होता था जैसे नील और अफीम की खेती। नील इंग्लैंड में बिकता था और अफीम ले जाकर वे चीन में बेचते थे जिसके कारण वहाँ अफीम युद्ध हुआ!

द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेज़ सैनिकों के खाने पीने का दबाव भी किसानों पर डाला गया। उन पर अतिरिक्त कर लगाये गए। क्योंकि भारत के पास संसाधन सीमित थे इसीलिए जितनी पैदावार होती थी उससे राशन में कमी आ जाती थी। इसी के चलते सन 1939 में अंग्रेज़ों ने एक कानून बनाया राशन कार्ड का। जिसके पास यह कार्ड होता था उसे सस्ते दाम पर निश्चित मात्रा में अनाज मिल पाता था। अब जिसके पास कार्ड नहीं, वो भूखा मरे और जिसके पास है

वो खाना खाए। भूमि अधिग्रहण कानून बना कर अंग्रेज़ किसानों से जमीन जबरन खरीद लेते थे। जो किसान जमीन देने से मना करता था, उसे सजा दी जाती थी। यह कानून जिस भ्रष्ट अंग्रेज़ अधिकारी ने बनवाया उसके सम्मान में भारत सरकार ने अभी तक अपने एक शहर का नाम रखा हुआ है - डलहौज़ी! जब से यह कानून बना है उससे पहले भारत में जमीन खरीदी और बेची नहीं जाती थी। भूमि अधिग्रहण कानून के बाद यह सिस्टम अंग्रेज़ों ने शुरू किया। अंग्रेज़ खेत के खेत खरीद कर उन्हें मनमाने दाम पर बेच देते थे। यह कानून आज भी लागू है और इसे चला रहे हैं काले अंग्रेज़! फर्क सिर्फ इतना है कि उस समय गोरे अंग्रेज़ अपने फायदे के लिए बेचते थे, आज काले अंग्रेज़ उसे विदेशी कंपनियों के फायदे के लिए बेचते हैं उदारीकरण की नीति के तहत।

1947 से पहले जिन कानूनों की आड़ में अंग्रेज़ों ने भारतीय किसानों और काश्तकारों को बर्बाद किया, वो सभी कानून भारत में आज़ादी के बाद भी जारी हैं। उस समय भी किसान अपनी फसल का दाम खुद तय नहीं कर सकता था और आज भी नहीं कर सकता! उस समय भी किसानों से जमीन छीन ली जाती थी और आज भी छीन ली जाती है। सरकार का यह कहना है कि इससे औद्योगीकरण होगा। खेती से बड़ा उद्योग और कौन सा हो सकता है? एक इंडस्ट्री में यदि आप सौ रूपए लगाते हैं तो आपको बदले में 40-70 रूपए मिलते हैं। पूरे संसार में केवल कृषि ही एक ऐसी इंडस्ट्री है जहाँ आप यदि सौ रूपए लगाते हैं तो बदले में आपको 1000 रूपए तक मिल सकता है क्योंकि फसल पक जाने के बाद आपकी इन्वेस्टमेंट multiply हो जाती है! इस देश का दुर्भाग्य यह है कि यहाँ की सरकार में बैठे नीतिनिर्धारक हर नीति को विदेशी पूँजी को ध्यान में रखकर बनाते हैं। उनके हिसाब से उद्योग पहले हैं और कृषि बाद में! यही कारण है कि मनमोहन सिंह ने एक बार कहा था, “देश में किसानों की संख्या अभी भी ज्यादा है। इन्हें शहरों की ओर मोड़ना होगा!”

किसान जितना पैदा करता है, सरकार के तय किए हुए दामों के हिसाब से उसे कभी लाभ नहीं होता। अगर एक किसान 2000 रुपये की फसल को बेचने जाता है तो उसे बदले में 1600-1800 रूपए मिलते हैं। लड़ झगड़ कर कुछ मिल भी

गया तो 2000 रूपए यानी जितना लगाया उतना ही मिला! यह पैसे भी एकदम नहीं मिल जाते, इसके लिए भी किसान को 6 महीनों तक इंतज़ार करना पड़ता है। इसका कारण यह है कि जिस अनुपात में जहरीले कीट-जंतुनाशक और खादों के दाम बढ़ते हैं, उतने अनुपात में फसल के दाम सरकार द्वारा नहीं बढ़ाये जाते! जब किसान के पास लाभांश नहीं होता तो उसे दोबारा खेती के लिए बैंकों से कर्ज लेना पड़ता है। अगर किसी कारण खेती बर्बाद हो जाती है तो बैंक कर्ज को माफ नहीं करता! पूरे गाँव भर में उस किसान की इज्जत उछाली जाती है। यही कारण हैं जिनकी वजह से भारत जैसे कृषि प्रधान देश के नायक कृषक को मजबूरी में आत्महत्या करनी पड़ती है क्योंकि इसके अलावा उनके पास और कोई चारा नहीं रह जाता! बड़ी बड़ी फैक्ट्रियां और धंधे चौपट हो जाते हैं तो उनके कर्ज भी माफ हो जाते हैं लेकिन किसान एक अपवाद है क्योंकि हमारी वर्तमान व्यवस्था में उसका स्थान सबसे अंत में है। आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि कितने मुश्किल हालातों में आज का हमारा किसान खेती करता होगा और हमें अन्न मुहैया कराता होगा! अब बहुत जल्द वो भी खत्म हो जाएगा यदि इस बार भी भारत की जनता चुनकर कांग्रेस को संसद में भेजती है क्योंकि इस बार walmart जैसी कंपनियों को सीधा प्रवेश दिया जाएगा भारत में!

अमरीका और यूरोप ने मिलकर एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था को जन्म दिया जिसका नाम है GATT (General Agreement on Trade and Tariff)। इस संस्था का काम यह था कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो झगड़े आयात निर्यात को लेकर हैं, उन्हें सुलझाया जाए। इस संस्था की नींव रखी गई सन 1948 में जब भारत आज़ाद हुआ ही था। उन दिनों ब्रिटेन ने भारत को इस संस्था का सदस्य बना दिया था। पहले इस संस्था की शर्तों के अनुसार GATT का कानून किसी भी देश के अंदर लागू नहीं होता था। अर्थात् यदि अपने हितों की रक्षा के लिए कोई देश कानून बनाता है तो वो कानून GATT पर भारी पड़ेगा। 1970-80 के दशक में अमरीका और यूरोप में भारी मंदी आई। उन्होंने यह तय किया कि इस मंदी से निकलने का एक ही रास्ता है और वो यह कि अपने सामान का निर्यात अधिक से अधिक किया जाए। चूँकि हर देश की आयात-निर्यात की अपनी नीति होती है इसीलिए भारत जैसे देश जो आबादी में बहुत अधिक है, ऐसे आयतों को

नामंजूर कर सकते थे। इसके लिए GATT ने अपने नियमों में फेरबदल किए और उन्हें कठोर बनाया। इन नए नियमों के अनुसार अब GATT के नियम सीधे तौर पर किसी भी देश के आंतरिक कानून को चुनौती दे सकते हैं! 15 दिसंबर 1994 को कांग्रेस की केन्द्रीय भारत सरकार ने दबाव में आकर GATT की इन नयी अपमानजनक शर्तों के आगे घुटने टेक दिए!

GATT के नए कानून भारत के 28 विभिन्न क्षेत्रों को सीधे तौर पर प्रभावित करते हैं! इन सभी क्षेत्रों में कृषि भी है। भारत में इससे पहले किसान बीज को बोकर, उसमें से फसल तैयार करके, फिर नए बीजों को चाहे तो बाज़ार में बेच सकता था लेकिन अब इस कानून के बाद वो ऐसा नहीं कर पायेगा। कारण यह है कि इस नए कानून के अनुसार बीज भी पेटेंट हो सकते हैं। एक पेटेंट की याचिका दाखिल करने के लिए 5-6 billion dollar लगते हैं और हमारे देश के 50 करोड़ किसान दो वक्त की रोटी ठीक से नहीं खा पा रहे! यह काम बड़ी कंपनियाँ ही कर सकती हैं! इस तरह वो इन बीजों के अधिकार को सुरक्षित कर लेंगी और केवल वे ही इन्हें बेच पाएंगी, वो भी अपनी कीमतों पर। आप में से कई लोगों ने एक शब्द सुना होगा 'Genetic Engineering'। यह इंसान के अतिआत्मविश्वास का वो क्षेत्र है जहाँ व्यक्ति विज्ञान के सहारे प्रकृति के नियमों के साथ छेड़छाड़ करने की कोशिश करता है। इसी का नतीजा है विशेष प्रकार के वो बीज जो सिर्फ एक ही बार फसल देते हैं, लेकिन दोबारा बीज नहीं देते ताकि कोई किसान या अन्य कंपनी उन बीजों को न बेच सके! इन्हें terminated seeds कहा जाता है। यह तकनीक अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने का नाम है! इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि इससे एक नयी तरह की घास पैदा होने लगी जो सारे पोषक तत्व मिट्टी से चूस लेती है और मरती भी नहीं! यही नहीं यह आसपास की फसल को भी क्षति पहुंचाती है।

इसी कानून का एक और नियम यह कहता है कि भारत में अनाज के किसी भी क्षेत्र में जो भी खपत होगी, उसका 8% बाहर से आयात करना ही पड़ेगा तथा 0.8% की दर से प्रतिवर्ष इस आयात में वृद्धि करनी पड़ेगी। जैसे, यदि भारत 24 करोड़ टन गेहूँ एक साल में खाया गया है तो उसका 8% यानी लगभग 2

करोड़ टन गेहूँ आयात करना ही पड़ेगा चाहे भारत को जरूरत हो या न हो! यही हाल अन्य क्षेत्र जैसे चीनी, गन्ना, दाल आदि पर भी लागू है। 1990 के दशक में किसानों ने सरकार 700 रुपये क्विंटल के दर से गन्ना खरीदने को कहा जिस पर सरकार ने केवल 650 रुपये क्विंटल में वो गन्ना किसानों से खरीदा जबकि उसी साल सरकार ने ऑस्ट्रेलिया की एक कंपनी से 850 रूपए क्विंटल की दर से गन्ना आयात करा! आज भारत में हालत यह है कि गेहूँ गोदाम में पड़ा पड़ा सड़ रहा है, किसानों को उनके गेहूँ का दाम नहीं दिया जा रहा है, 80 करोड़ लोग दो समय का भोजन नहीं कर पा रहे और सरकार कह रही है कि भारत निर्माण हो रहा है! वास्तव में भारत की कृषि व्यवस्था को नष्ट करने का पूरी दुनिया में एक षड्यंत्र चल रहा है जिसे भारत में कांग्रेस अंजाम दे रही है!

GATT के नए कानून के अनुसार अब दालों, अनाजों यहाँ तक कि तुलसी, हल्दी और नीम पर भी पेटेंट लिया जा सकता है जो भारत में भी मान्य होगा। इससे पहले जिस देश में पेटेंट मिलता था केवल उसी देश में वो मान्य होता था लेकिन अब वो स्थिति नहीं है। इसी से आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि अगर इन सब प्राकृतिक चीज़ों पर भी पेटेंट मिलने लगेगा तो खाने की चीज़ें तो आयात होंगी ही। वैसे भी अब शिक्षा व्यवस्था ने यहाँ के लोगों की मानसिकता कुछ ऐसी बना दी है कि जो इम्पोर्टेड है वो सही है! इससे होगा यह कि प्रत्येक चीज़ बाहर से आयात होगी और यहाँ पर जो पहले से ही चीज़ें हैं जैसे गेहूँ, उनका दाम गिरेगा। दाम गिरने से किसानों को जो पहले ही पूरा दाम न मिलने के कारण कर्ज़ में दबे हुए थे, और बुरी स्थिति में पहुँच जाएँगे! यही कारण है कि पिछले 10 वर्षों में हज़ारों किसानों ने खेती छोड़कर शहरों में मजदूरी का रास्ता अपना लिया है। आज जो आप फुटपाथ और फ्लाईओवर के नीचे परिवार पलते हुए देख रहे हैं, उनमें से अधिकांश छोटे छोटे किसान ही थे! अभी तो इससे भी बुरी हालत होने वाली है जब वालमार्ट जैसी बड़ी अमरीकी कंपनियाँ इस देश में घुसँगी।

इस अपमानजनक GATT करार में से निकलने का भी एक तरीका है जो खुद इस करार में लिखा हुआ है। जब किसी भी देश की सरकार से GATT संस्थान

को करार तोड़ने का पत्र मिलेगा, उससे ठीक 6 महीने बाद वह देश इस करार से बाहर होगा। यह बात भारत सरकार को भी पता है लेकिन उसने पिछले 19 सालों में ऐसा नहीं किया और न ही करेगी क्योंकि वह भारतीयों के द्वारा चुनी जरूर गई है लेकिन भारतीयों के लिए बनी नहीं! सरकार तंत्र को चलाती है और तंत्र सरकार को चलाता है तथा इस पहिये को गति देने का काम करती है उस लोकतान्त्रिक देश की जनता! अब 2014 में ऐसे लोग संसद में चाहिए जो इस पूरे तंत्र को खत्म कर दें और GATT जैसे 34735 कानून जो अंग्रेजों ने देश को लूटने के लिए बनाये थे, उनका खात्मा कर भारत को सच्ची आज़ादी दिलाएं!

क्या आपको पता है सोयाबीन इंसानों के खाने की फसल नहीं है? पूरे अमरीका में सोयाबीन कोई नहीं खाता और यूरोप में भी कोई नहीं खाता। वैज्ञानिक इसे न खाने की ही सलाह देते हैं क्योंकि इसमें बहुत ही जटिल किस्म का प्रोटीन होता है जो सामान्यतया मनुष्यों द्वारा पचाया नहीं जा सकता! यूरोप में केवल होलैंड में इसकी खेती की जाती थी और सूअरों को खिलाई जाती थी। इससे उनके शरीर में माँस बढ़ता था जिसे वहाँ के लोग बड़े ही चाव से खाते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे बत्तखों में जबरन fat ठूस कर उनको फुलाया जाता है और फिर अधिक fat होने से वो मर जाती हैं। इसके बाद उनके फूले हुए जिगर (liver) को वहाँ के लोग खाते हैं केवल अपने स्वाद के लिए! सोयाबीन के साथ सबसे खराब बात यह है कि इसकी पैदावार में मिट्टी में पाए जाने वाले सारे पोषक तत्व खर्च हो जाते हैं जिसके चलते कुछ वर्षों बाद मिट्टी कुछ भी पैदा करने लायक नहीं बचती! इसी वजह से होलैंड की धरती को बहुत नुकसान हुआ और उसने इसका ठेका दिया भारत को। भारत सरकार ने होलैंड के साथ संधि कर मध्य प्रदेश से इसकी फसल की शुरुआत की। धीरे धीरे गुजरात और फिर महाराष्ट्र में इसकी खेती होती है। आज से 30-35 साल पहले तक इस देश में कोई यह भी नहीं जानता था कि सोयाबीन किस चिड़िया का नाम है। यह हमारे देश की फसल कभी नहीं थी। यदि आप अपने स्वास्थ्य और देश के प्रति जरा भी संवेदनशील हैं तो आज ही से सोयाबीन खाना बंद करें! जितने पोषक तत्व

और प्रोटीन एक इंसान को चाहिए होते हैं वे पर्याप्त मात्रा में दालों में पाए जाते हैं।

कुल मिलाकर इस समय अन्नदाता किसान और कृषि की बहुत ही दयनीय स्थिति है! यह एक ऐसी आपातकाल स्थिति है कि हमारे पास अब चंद वर्षों की ही मोहलत बची है क्योंकि सरकारी नीतियों और जहरीले कीटनाशक-खाद देश की मट्टी पलीद कर रहे हैं। खानापूर्ति के लिए सरकार कुछ सुझाव देती अवश्य है परंतु वह भी ऊँट के मुँह में जीरे वाली बात है क्योंकि परिस्थितियाँ नीतियों का परिणाम होती हैं और नीतियाँ सरकार तय करती है! भारत सरकार, जिसमें से सबसे अधिक बार कांग्रेस सत्ता में रही है, के पास 66 वर्षों का समय रहा है और हालात ये हैं कि 84 करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं, 20 करोड़ से ज्यादा लोग बेरोजगार हैं, लाखों किसान आत्महत्या कर रहे हैं और खेती छोड़ रहे हैं, देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है, भारतीय मुद्रा अपनी हैसियत खोती जा रही है तथा महंगाई आम जनता का गला दबा रही है! ये सारे चिन्ह हमारी व्यवस्था के चौपट होने के संकेत हैं जिन्हें यदि हमने समय रहते नहीं समझा तो बहुत देर हो चुकी होगी!

जय भारत...